साप्ताहिक

RNI-MPHIN/2015/72544

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 30 जनवरी-05फरवरी, 2023, वर्ष-8, अंक-42 | भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित | पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

खेती में किए गए नवाचार पर मिला सम्मान

चार किसानों को पद्मश्री

भोपाल/नई दिल्ली।

कृषि प्रधान इस देश में जहां खेती-बाड़ी किसानों के जीवन की धुरी है तो वहीं भारत की अर्थव्यवस्था की बुनियाद भी है। खेती अब महज खेती नहीं रह गई, बल्कि नवाचारों को अपनाकर किसानों ने खेती की दुनिया को ही बदल दिया है। कुछ किसानों ने पारंपरिक खेती और देसी बीजों का नारा बुलंद करके देश भर में नाम कमाया है तो कुछ किसान नई तकनीकों के दम पर सफलता की इबारत लिख रहे हैं। ऐसे ही नवाचारों को सरकार भीड़ में से भी ढूंढ निकालती है, जो बाकी किसानों के लिए आदर्श बनते हैं। इस साल भी कृषि क्षेत्र में अपने विचारों से बदलाव लाने वाले किसानों को सरकार ने पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया है। इन किसानों में सिक्किम के किसान तुला राम उप्रेती, उड़ीसा के पटायत साहू, केरल के चेरुवयल रामन और हिमाचल प्रदेश के नेकराम शर्मा भी शामिल हैं। हिमाचल प्रदेश के नेकराम शर्मा को देशी अनाजों का रक्षक माना जाता है, जो पिछले 30 सालों से 40 अनोखी प्रजातियों का संरक्षण कर रहे हैं। नेकराम ने नौ अनाज पारंपरिक फसल प्रणाली को दोबारा जीवित किया है। आज के आधुनिक दौर में जहां नई तकनीकों और हाइब्रिड बीजों से किसान फसलों का उत्पादन बढ़ाने पर फोकस करते हैं। वहीं नेकराम शर्मा से प्रकृति के संरक्षण के लिए पारंपरिक खेती और देसी बीजों का नारा बुलंद किया है।

उड़ीसा के पटायत साहू

कोरोना महामारी के बाद से ही औषधियों की उपयोगिता बढ़ गई है। ये कोई नया मॉडल नहीं है, बल्कि भारत तो हमेशा से ही आयुर्वेद का प्रणेता रहा है। यहां युगों-युगों से औषधियों का उत्पादन, उपभोग और निर्यात होता आया है। उड़ीसा के पटायत साहू, जिनकी तारीफ खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की है। साहू ने मात्र डेढ़ एकड़ जमीन से 3,000 से अधिक औषधियों का उत्पादन लिया ही है, अपने इस अनुभव को साझा करते हुए लेख भी प्रकाशित करवाए हैं। साहू बिनी किसी कैमिकल के ही औषधियां उगाते हैं।

केरल के चेरुवयल रामन

भारत ने आज दुनिया के दूसरे बड़े धान उत्पादन के तौर पर पहचान बना ली है। देश में आज बेशक धान की उन्नत हाइब्रिड किस्में प्रचलन में आ गई हों, लेकिन कई सदियों से धान की औषधीय, जलवायु परिवर्तन के लिए प्रतिरोधी और खास देसी किस्में पहले से ही मौजूद हैं। इनमें से कई विलुप्त की कगार पर हैं। केरल के चेरुवयल रामन ने सालों से धान की देसी प्रजातियों के संरक्षण का जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली है। आज उन्होंने धान की 54 प्रजातियों का संरक्षण किया है। अपना पूरा जीवन खेती और देसी बीजों के संरक्षण को समर्पित कर दिया है।

सिक्किम के तुला राम उप्रेती

सिक्किम पूरी दुनिया में ऑर्गेनिक स्टेट बनकर उभरा है। सिक्किम के ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स देश-विदेश में अपनी खास पहचान बना चुके हैं। इसका पूरा श्रेय सिक्किम के किसानों को जाता है, जो जैविक खेती के जरिए पर्यावरण और स्वास्थ्य सुरक्षा में अहम रोल अदा कर रहे हैं। सिक्किम के 98 वर्षीय तुला राम उप्रेती भी उन्हीं किसानों में शामिल हैं। जिन्होंने जीवन जैविक खेती को समर्पित कर दिया। दूसरे किसानों को भी जैविक खेती-प्राकृतिक खेती के गुर सिखाए। उप्रेती ने जैविक खेती और खेती में नाम कमाया। आज के इस दौर में जहां किसान जैविक खेती करने से कतराते हैं।

जखनी के जल योद्धा उमाशंकर पांडेय को पद्मश्री सम्मान

लखनऊ। बुंदेलखंड के लिए गौरव, पानी के पहरेदार जखनी गांव के जल योद्धा उमाशंकर पांडेय को भारत सरकार ने पद्मश्री से सम्मानित किया है। सूखे की विभीषिका झेलने वाले बुंदेलखंड के बांदा जिले के जखनी को जल ग्राम बनाने में उमा शंकर पांडे ने भागीरथी भूमिका निभाई। उमाशंकर पांडेय ने खेत पर मेड़ और मेड़ पर पेड़ का मंत्र पूरे देश को दिया। सामुदायिक सहभागिता से उन्होंने जल संरक्षण की दिशा में अनेक कार्य किए। उमाशंकर कहते हैं कि सरकार ने उनकी उपलब्धि का मान रखते हुए उन्हें इस सम्मान से नवाजा है। उनके 30 वर्ष से निस्वार्थ भाव से किए गए कार्य का यह प्रतिफल है। 61 वर्षीय उमा शंकर ने युवावस्था में विकलांग होते हुए भी विकलांगों के कल्याण के लिए अनेक कार्य किए। उन्होंने जिले में लोगों से सहयोग मांग-मांग कर एक झोपड़ी में विकलांगों को शिक्षित करने का प्रयास किया।

कर्तव्य पथ पर आईसीएआर की झांकी ने मोहा मन

नई दिल्ली। 74वें गणतंत्र दिवस के समारोह में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में कर्तव्य पथ पर अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष 2023 के उपलक्ष्य में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा बनाई गई मनोहारी झांकी का प्रदर्शन किया गया। यह झांकी अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष को समर्पित की गई। इस दौरान मिलेट्स की खेती व उसके सेवन से जुड़े कई महत्वपूर्ण जानकारियों के बारे में बताया गया। मिलेट्स की इस झांकी में इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट के लिए चिन्हित मोटे अनाज ज्वार, बाजरा, रागी, कुटकी, कंगनी और सावां की फसल को बेहद खूबसूरत तरीके से दिखाया गया है।

किसानों ने चार-चांद लगाए

कर्तव्य पथ पर निकाली गई अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष 2023 की झांकी में देश के किसान कलाकार बनकर झूमते-गाते और साथ ही मिलेट का उत्सव मनाते नजर आए। इस दौरान कर्तव्य पथ पर मौजूद लोग अपनी सीट से खड़े होकर इस झांकी का आनंद लेने लगें। किसानों ने भी झांकी में अपने लोक गीतों को सुनाकर झांकी में चार-चांद लगा दिए, जिसके चलते सभी हस्तियों का ध्यान इस झांकी की तरफ खुद खींचा चला गया।

किसान बोला-मेरा गेहूं पहले कभी इतने भाव में नहीं बिका

पांच क्विंटल गेहूं के तुलसीराम को 34 हजार रुपए मिले

खंडवा में रिकॉर्ड 6711 रुपए क्विंटल में बिका नया गेहूं

खंडवा। जागत गांव हमार

खंडवा कृषि उपज मंडी में नया गेहूं रिकॉर्ड 6711 रुपए क्विंटल में बिका। मुहूर्त में गेहूं खरीदी के लिए व्यापारियों ने ऊंची से ऊंची बोली लगाई। मंडी में केवल एक ही किसान तुलसीराम चौहान पांच क्विंटल नया गेहूं लेकर आया था। तीन हजार रुपए क्विंटल से नीलामी में पहली बोली प्रशांत अग्रवाल ने लगाई। इसके बाद बोली बढ़ती चली गई। अंतिम बोली 6711 रुपए क्विंटल की प्रशांत अग्रवाल ने लगाई और गेहूं खरीद लिया। पांच क्विंटल गेहूं के किसान तुलसीराम को 34 हजार रुपए मिले।

किसान बोला-मेरा नसीब चमक गया

किसान ने कहा कि मेरा गेहूं पहले कभी इतने भाव में नहीं बिका। मेरा तो नसीब चमक गया। व्यापारी अग्रवाल ने कहा कि पहली बार मंडी में उपज लेकर आने वाले किसान को मुहूर्त में अच्छा भाव मिले इसी उद्देश्य से बोली लगाई गई। मंडी में पुराना गेहूं 2800 से 3000 रुपए क्विंटल बिक रहा है।

ऐतिहासिक मुहूर्त भाव | गौरतलब है कि पिछले वर्ष गेहूं लगभग 2500 रुपए क्विंटल से अधिक में बिका था। इधर मंडी सचिव ओपी खेड़े ने बताया कि मंडी में कभी इतने अधिक भाव मे गेहूं की नीलामी नहीं हुई। यह ऐतिहासिक मुहूर्त भाव रहे। किसान को उसकी उपज का उचित मूल्य मिले, मंडी प्रशासन का प्रयास रहेगा।

प्रदेश में 10.90 लाख टन का किया जाएगा अग्रिम भंडारण

खरीफ-रबी के समय खाद की किल्लत नहीं होगी

किसानों की नाराजगी से बचने अतिरिक्त खाद खरीदेगी सरकार

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश की सियासत में किसान हमेशा से केंद्र में रहा है। चुनावी दौर में किसानों की नाराजगी से बचने के लिए सरकार ढाई लाख टन अतिरिक्त खाद खरीदेगी। यह निर्णय इसलिए किया गया है ताकि खरीफ और रबी फसलों के समय खाद की किल्लत न हो। अग्रिम भंडारण भी मार्च के स्थान पर फरवरी से प्रारंभ किया जाएगा। किसान भी मांग के अनुरूप खाद का अग्रिम भंडारण कर सकेंगे, इसका ब्याज भी उनसे नहीं लिया जाएगा। गौरतलब है कि रबी फसलों के लिए इस बार किसानों को खाद प्राप्त करने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ा था। अव्यवस्था से हुई परेशानी के कारण कई जगह किसानों ने नाराजगी प्रदर्शित की। स्थिति से निपटने के लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को मोर्चा संभालना पड़ा था। उन्होंने केंद्र सरकार से अतिरिक्त खाद प्राप्त करने के साथ वितरण व्यवस्था को नियमित निगरानी कर ठीक कराया था।

45 लाख टन खाद की जरूरत

खाद संकट की स्थिति चुनाव के समय न बने, इसके लिए सरकार ने अग्रिम भंडारण की कार्ययोजना बनाई है। इसमें यूरिया, डीएपी और एनपीके का 10.90 लाख टन अग्रिम भंडारण किया जाएगा। यह लक्ष्य 8.40 लाख की तुलना में 2.5 लाख टन अधिक है। प्रदेश में खरीफ और रबी फसलों के लिए 45 लाख टन खाद लगती है। इसमें 30 लाख टन खाद की व्यवस्था सहकारी समितियों और 15 लाख टन खाद की आपूर्ति निजी क्षेत्र से होती है।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान संकल्पित हैं। किसानों को किसी भी कीमत पर परेशान नहीं होने देंगे। हमने अतिरिक्त खाद के अग्रिम भंडारण का निर्णय लिया है। इससे किसान को समय पर खाद की उपलब्धता सुनिश्चित होगी।

अरविंद भदौरिया, सहकारिता मंत्री

प्रयोग: जिले की विशेषताएं दर्शाने वाले स्मारक बनाए जाएंगे

गुजरात की तर्ज पर मप्र में भी सांस्कृतिक वन बनाएगी सरकार

भोपाल। जागत गांव हमार

गुजरात की तर्ज पर मध्य प्रदेश में हर वर्ष एक जिले में सांस्कृतिक वन बनाया जाएगा, इसको लेकर अध्ययन कराया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात में वर्ष 2004 में सांस्कृतिक वन की नींव रखी थी, अब तक ऐसे 22 सांस्कृतिक वन बनाए जा चुके हैं, जिनमें गुजरात का रक्षा क्षेत्र, संस्कृति, वीरता और इतिहास का दर्शन समाहित है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस योजना पर चल रहे कार्यों की जानकारी लेने एवं उसे अपनाने के बारे में कहा था, जिस पर मध्य प्रदेश के मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस ने वन विभाग के चार आईएफएस अधिकारियों को गुजरात अध्ययन के लिए भेजा था। गुजरात के भुज एवं सुरेंद्रनगर में बने सांस्कृतिक वनों का अध्ययन किया गया।

छह हेक्टेयर में सांस्कृतिक वन- गुजरात में एक दशक पहले तत्कालीन मुख्यमंत्री मोदी ने हर वर्ष एक जिले में पांच से छह हेक्टेयर क्षेत्र में सांस्कृतिक वन बनाने का निर्णय लिया था और अब तक ऐसे 22 वन बन चुके हैं। इन वनों में जिले की विशेषताओं को दर्शाने वाले स्मारक बनाए गए हैं। गुजरात में सांस्कृतिक वन पर 12 से 19 करोड़ रुपए व्यय किए गए हैं। इन वनों में पर्यटक भी काफी संख्या में आते हैं। अब इस तरह का प्रयोग मध्य प्रदेश सरकार करने जा रही है।

पेश की जाएगी अध्ययन रिपोर्ट

वन मुख्यालय में विकास शाखा के एपीसीसीएफ यूके सुबुद्धि ने गुजरात के अध्ययन के बाद रिपोर्ट तैयार कर ली है। अपर मुख्य सचिव जेएन कंसोटिया के समक्ष प्रस्तुतिकरण दे दिया है। इसके बाद अब मुख्य सचिव के समक्ष इसे प्रस्तुत किया जाएगा। यदि इस पर अमल हुआ तो मध्य प्रदेश में भी हर साल एक जिले का चयन कर उसमें गुजरात की तर्ज पर सांस्कृतिक वन बनाए जाएंगे।

डीएफओ से मांगे प्रस्ताव | वन विभाग ने सांस्कृतिक वन बनाने के लिए प्रदेशभर के डीएफओ को पत्र लिखकर जिलों के प्रस्ताव बनाकर भेजने को कहा है। डीएफओ से कहा गया है कि वे अपने जिले में वन क्षेत्र या राजस्व क्षेत्र में ऐसे स्थान चिन्हित करें जहां सांस्कृतिक वन बनाया जा सकें। यह वन जिलों की संस्कृति पर आधारित होगा, जिसमें संबंधित जिले का इतिहास और विशेषता समाहित रहेगी।

मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस के निर्देश पर चार आईएफएस अधिकारियों का दल गुजरात अध्ययन पर गया था। मैं भी इस दल में शामिल था। रिपोर्ट बनाकर शासन के समक्ष प्रस्तुतीकरण दिया गया है। अब शासन स्तर पर ही सांस्कृतिक वन बनाने का निर्णय लिया जाना है। हम अपने स्तर पर पूरी तैयारी कर चुके हैं और जिलों से रिपोर्ट मंगाई है।

यूके सुबुद्धि, एपीसीसीएफ विकास, वन मुख्यालय भोपाल

जिम्मेदारों में मचा हड़कंप: पोल खुली तो जागे विभागीय अफसर

करोड़ों की धान के नाम पर खरीद लिए पत्थर और भूसा

बड़ा फर्जीवाड़ा एक बोरी में मिल रहे चार किलो तक पत्थर

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रदेश में हाल ही में की गई धान की खरीदी में जमकर भ्रष्टाचार किया गया है। सरकार की समर्थन मूल्य योजना के तहत हुई धान खरीदी में धांधली सामने आई है। धान खरीदी में समितियों ने फर्जीवाड़ा करते हुए पत्थर और भूसा तक खरीद लिया है। सरकारी खजाने को चपत लगाने के चक्कर में बालू, पत्थर और अमानक धान की खरीदी हुई। इस गड़बड़झाले का खुलासा होने के बाद जांच की जा रही है। अधिकारियों की जांच में सच सामने आ गया। धान खरीदी में सबसे बड़ी धांधली सतना में सामने आई है। ऐसा ही एक मामला शिवराजपुर उपार्जन केंद्र में सामने आया। वैष्णो देवी स्व सहायता समूह बंडी ने नियमों को ताक पर रखकर करोड़ों रुपए कीमत की अमानक धान की खरीदी की। साथ ही वजन बढ़ाने के लिए बालू, पत्थर मिला दिया। इस गड़बड़झाले का खुलासा हुआ था। इस खुलासे के बाद कलेक्टर अनुराग वर्मा के निर्देश पर जिला आपूर्ति अधिकारी केके सिंह, जिला प्रबंधक नान दिलीप सक्सेना उपार्जन केंद्र पहुंचे। टीम को 15450 बोरी यानी 6180 क्विंटल अमानक धान मिली। इस धान की कीमत 1 करोड़ 26 लाख रुपए बताई जा रही है। टीम ने जब बोरियों में से एक बोरी धान पलटी करवाई तो 4 किलो का पत्थर सामने आया- समर्थन मूल्य पर किसानों से खरीदी गई धान की बोरियों में पत्थर भरकर वजन बढ़ाने का खेल भी केंद्र संचालक ने किया। शिवराजपुर केंद्र पहुंची टीम ने जब बोरियों में से एक बोरी धान पलटी करवाई तो 4 किलो का पत्थर सामने आया। धान की बोरी में पत्थर देख अधिकारी भी हैरान रह गए।

ट्रांसपोर्टिंग की आड़ में खेल

प्रदेश भर में धान उपार्जन का काम 16 जनवरी के बाद बंद कर दिया गया है, लेकिन इसके बाद भी ट्रांसपोर्टिंग की आड़ में खरीदी केंद्रों में खेल जारी है। केंद्रों का संचालन कर रहे समूहों और सहकारिता समितियो ने एडवांस में धान की फीडिंग कर रखी है। इसी फीडिंग की भरपाई भौतिक रूप से धान की उपलब्धता से करने के लिए इन्होंने अपने केंद्रों की उपार्जित धान का परिवहन जान बूझकर नही कराया है ताकि स्टॉक नजर आता रहे और वे धीरे धीरे प्रबंध कर फीडिंग के मुकाबले धान जमा करवा सकें।

धान नहीं मिल पा रही

जिन केंद्रों में फीडिंग का खेल नही खेला गया वहां से धान का उठाव भी 16 जनवरी को उपार्जन बंद होने के 1-2 दिन के अंदर ही हो गया और वहां का स्टॉक भी नील हो गया, लेकिन जहां-जहां ये खेल हुआ। वहां अभी भी धान की बोरियां परिवहन के लिए पड़ी है। जिन्हें फीडिंग के मुकाबले जमा कराने के लिए धान नहीं मिल पा रही है वे उपलब्ध धान की बोरियों में वजन बढ़ाने के लिए बालू,गिट्टी-कंकड़ और अमानक धान भर रहे है।

-सीएम हेल्पलाइन के निराकरण में सबसे आगे

प्रदेश में रीवा जिला पंचायत काम में निकली अव्वल

रीवा। जागत गांव हमार

सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों के निराकरण मामले में मध्य प्रदेश की रीवा जिला पंचायत अव्वल रही है। वहीं रीवा पुलिस को प्रकरणों के निराकरण में प्रदेशभर में आठवां स्थान मिला है। यह सूची दिसंबर-2022 में निराकृत हुए मामलों के आधार पर जारी की गई है। प्रदेशभर में आम जनता के आवेदन पत्रों के निराकरण के लिए सीएम हेल्पलाइन एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। जारी रैंकिंग के अनुसार दिसम्बर-2022 में जिला पंचायत रीवा में 1529 आवेदन पत्र सीएम हेल्पलाइन में दर्ज किए गए थे। इन आवेदन पत्रों में से संतुष्टि के साथ आवेदन पत्र के निराकरण में जिला पंचायत को 51.33 प्रतिशत वेटेज अंक मिले है। रैंकिग के मुताबिक ही सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण में जिला पंचायत रीवा को दिसंबर माह में प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। दिसंबर माह की रैंकिंग में जिला पंचायत सीहोर को 86.25 प्रतिशत कुल वेटेज स्कोर के साथ दूसरा स्थान तथा जिला पंचायत शहडोल को 85.80 प्रतिशत कुल वेटेज स्कोर के साथ प्रदेश में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

कलेक्टर ने दी बधाई

रीवा जिला कलेक्टर मनोज पुष्प ने जिला पंचायत के सीईओ और ग्रामीण विकास विभाग के अन्य अधिकारियों को बधाई दी है। हालांकि रीवा जिले की पुलिस विभाग को प्रदेश भर में आठवां स्थान प्राप्त करके संतोष करना पड़ा। वही रीवा संभाग के अंतर्गत आने वाला सतना जिले की पुलिस विभाग सीएम हेल्पलाइन समस्या के निराकरण मामले में पहले पायदान पर रही।

50 दिवस से अधिक समय से लंबित शिकायतों के निराकरण में 20 से 18.65 प्रतिशत वेटेज अंक मिले है। जिला पंचायत रीवा को कुल 89.87 प्रतिशत वेटेज स्कोर के साथ प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है।

स्वप्निल वानखेड़े, सीईओ, जिपं, रीवा

मैनिट में अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव: बच्चों ने दिए वैकल्पिक ऊर्जा के साधन

स्मार्ट फ्रेमिंग आईआईओटी डिवाइस किसानों की दूर करेगी परेशानी

भोपाल। जागत गांव हमार

मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में चल रहे 8वें भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव में विभिन्न गतिविधियां हुई। मप्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के तत्वावधान में चार दिवसीय विज्ञान महोत्सव के इस उत्सव में वैज्ञानिक सोच रखने वाले युवाओं की विकासशील सोच का प्रदर्शन देखने को मिला। महोत्सव के दौरान मूलरूप से स्टूडेंट्स विलेज, स्टार्टअप हब और आर्टिजन की गतिविधियां रही। एक तरफ जहां विजिटर्स ने विज्ञान और तकनीक से जुड़े इनोवेटिव आइडियाज पर विकसित किए गए प्रोडक्ट को देखा। वहीं दूसरी ओर देश के विभिन्न शहरों से आये कलाकारों ने पारंपरिक कलाकृतियों को प्रदर्शित कर विजिटर्स को आकर्षित किया।

गैस उत्पादन का मॉडल बनाया

साइंस विलेज में आए बच्चों ने क्रिएटिविटी और इनोवेशन से धमाल मचा रखा। स्कूली बच्चों द्वारा तैयार किए गए इन मॉडल्स को देख लोगों ने बच्चों की क्रिएटिविटी की सराहना की है। बच्चों ने वैकल्पिक ऊर्जा के साधन के रूप में बायोगैस प्लांट से गैस उत्पादन का मॉडल बनाया। इसमें 20 लीटर पानी एवं गोबर के घोल से एक दिन में चार बार चाय बनाने भर की गैस का उत्पादन किया गया।

किसानों के लिए संजीवनी डिवाइस

गुवाहाटी से आए नवरात्री इनोवेशन की टीम ने खेतों में किसानों को होने वाली परेशानियों को राहत देने के लिए विशेष स्मार्ट फ्रेमिंग आईआईओटी डिवाइस तैयार की है। यह डिवाइस मिट्टी की नमी, ट्रेम्प्रेचर, हवा की स्पीड और ह्यूमिडिटी की जानकारी मोबाइल फोन पर देती है। टीम के सदस्य ने बताया कि इस डिवाइस में चार सेंसर का यूज किया गया है जो खेत के अलग-अलग स्थानों पर लगाए जाते हैं। डिवाइस का मेन स्विच मोटर पंप से कनेक्ट होता है। खेत में जब जितनी पानी की जरूरत होगी ऑटोमेटिक पंप स्विच ऑन करेगा, जिससे खेत में जरूरत के हिसाब से सिंचाई का पानी की सप्लाई हो जाएगी।

नर्मदा को प्रदूषण मुक्त कर आत्मनिर्भर बन रहीं अंचल की महिलाएं

नर्मदाजल में प्रवाहित फूल से बनाई जा रही सुगंधित धूप और अगरबत्ती

नर्मदापुरम। जागत गांव हमार

प्रदेश की जीवन दायिनी मां नर्मदा के प्रति लोगों में अटूट आस्था है। रोजाना ही नर्मदाजल में फूलमाला भी प्रवाहित की जाती है। जिसके चलते प्रदूषण भी बढ़ रहा है। नर्मदापुरम में नर्मदा जल में प्रवाहित होने वाली फूल माला का उपयोग सुगंधित अगरबत्ती व धूपबत्ती बनाने के लिए किया जा रहा है। इस काम का बीड़ा ग्राम जासलपुर की महिलओं ने उठाया है। ग्राम जासलपुर की महिलाओं के समूह को जिला प्रशासन ने इस काम के लिए चुना है। कलेक्टर नीरज सिंह के प्रयासों से महिलाएं आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही हैं। नर्मदा जल से फूलों के एकत्रीकरण करने के साथ ही अगरबत्ती व धूपबत्ती बनाने का कार्य महिलाओं का समूह कर रहा है।

महिला ने बनाई अलग पहचान- यदि इच्छा शक्ति व लगन हो तो कठिन से कठिन कार्य को आसानी से किया जा सकता है। अपनी इच्छा शक्ति के बल पर नर्मदापुरम जिले की महिलाओं ने अपनी अलग पहचान बना ली है। महिलाओं की पहचान बनाने की दास्तां भी अनूठी है। नर्मदा जल में अर्पित फूलों से अगरबत्ती और धूपबत्ती बनाकर महिलाओं ने अपना मुकाम बनाया है। ग्राम जासलपुर का सरस्वती व रविदास महिला समूह नर्मदा जल में अर्पित होने वाले फूलों के जरिए अगरबत्ती व फूलबत्ती बनाने में जुटा है।

एक नजर में

ब्रांड का नाम	रेवा सुमन
स्व सहायता समूह का नाम	सरस्वती एवं रविदास
प्रतिदिन एकत्र किए जाने वाले फूलों के अपशिष्ट की मात्रा	25 किलो
अगरबत्ती निर्माण प्रतिदिन	10 किलो
लागत	50 रुपए प्रति पैकेट
थोक मूल्य	80 से 100 रुपए प्रति पैकेट
खुदरा मूल्य	200 रुपए प्रति पैकेट
कुल बिक्री	2260 पैकेट
विक्रय राशि	240000
लाभ	1.15 लाख रुपए

एकत्र किए जाते हैं फूल

सरस्वती एव रविदास समूह की महिलाएं नर्मदाजल में प्रवाहित होने वाले फूलों व मंदिरों में चढ़ने वाले फूलों को एकत्र करती हैं। फूलों को सुखाकर उनका पावडर बनाकर उच्च गुणवत्तापूर्ण सुगंधित अगरबत्ती धूपबत्ती का निर्माण किया जाता है व अच्छी पैकिंग की जाती है।

इनका कहना है

नर्मदाजल को प्रदूषण से मुक्त करने व महिलाओं को रोजगार मुहैया कराने की दिशा में कदम उठाया गया है। महिला समूह द्वारा बेहतर कार्य किया जा रहा है। रेवा सुमन अगरबत्ती ब्रांड के रूप में पहचानी जा रही है।

- नीरज सिंह, कलेक्टर, नर्मदापुरम

पर्यटन स्थलों पर होगी उपलब्ध

अगरबत्ती का विक्रय एवं विपणन विभिन्न प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों पर किया जाएगा। मढ़ई, चूरना, पचमढ़ी, तिलक सिंदूर, सलकनपुर आदि स्थनों पर यह अगरबत्ती मिलेगी। इसके साथ ही रेशम विभाग के प्राकृत शोरूमों, मृगनयनी के अलावा आनलाइन मार्केटिंग के माध्यम से भी मिल सकेगीं हो रहा है।

नर्मदाजल हो रहा प्रदूषण मुक्त

नर्मदाजल को प्रदूषण मुक्त करने के लिए कलेक्टर नीरज सिंह ने कार्ययोजना तैयार की। उन्होंने लोगों की भावनाओं को देखते हुए फूलमाला से सुगंधित अगरबत्ती बनाने की दिशा में कदम बढ़ाया। इससे सबसे बड़ा लाभ महिलाओं को यह मिला कि आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ी हैं। साथ ही मां नर्मदा का जल भी प्रदूषण मुक्त हो रहा है। कलेक्टर सिंह के निर्देश पर जिला पंचायत के आजीविका मिशन द्वारा स्व सहायता समूह की महिलाओं को प्रशिक्षण दिलाया।

कृषि विवि के छात्र अलग-अलग देशों की तकनीक को सीखेंगे

अस्ट्रेलिया में सीखेंगे डेयरीफार्मिंग और इजराइल में परिशुद्ध खेती

- प्रदेश के छात्रों को फिलिपिंस और जर्मनी भी भेजा जाएगा
- छात्रों के जाने का खर्च आईसीआर और वर्ल्ड बैंक उठाएगा

ग्वालियर। जागत गांव हमार

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के छात्र जल्द ही अलग-अलग देशों की अत्याधुनिक तकनीक को सीख सकेंगे। इसके लिए बीएससी तृतिय और चतुर्थ वर्ष के छात्रों का मैरिट के आधार पर मौखिक साक्षात्कार भी हो चुका है। इन छात्रों को आस्ट्रेलिया, इजराइल, मलेशिया, फिलिपिंस और जर्मनी भेजा जाएगा। इन देशों के संस्थानों से कृषि विश्वविद्यालय का अनुबंध हुआ है। छात्रों के जाने का खर्च आईसीआर और वर्ल्ड बैंक उठाएगा। इन देशों में छात्र डेयरीफार्मिंग से लेकर परिशुद्ध खेती के गुर सीखेंगे। जिससे कम लागत में किसान अच्छी फसल लेकर मोटा मुनाफा कमा सकें। असल में सरकार मोटे अनाज का उत्पादन को बढ़ावा देने पर जोर दे रही है। जिसको लेकर कृषि विश्वविद्यालय आधुनिक तकनीक के सहारे किसान को प्राकृतिक खेती करना करने के बारे में बताएगी। विदेश से आधुनिक तकनीक सीखकर आने वाले छात्रों से देश के किसानों को लाभ मिलेगा।

विवि के छात्र जाएंगे विदेश

कृषि छात्रों को विदेश में आधुनिक तकनीक से हो रही खेती के बारे में सीखने का अवसर आईसीआर ओर वर्ल्ड बैंक की मदद से दिया जा रहा है। आईसीआर और वर्ल्ड बैंक छात्रों के आने जाने व रहने का पूरा खर्चा देता है। जिन देशों से विवि का अनुबंध हुआ है उन देशों में छात्रों को भेजने के लिए आईसीआर और वर्ल्ड बैंक को प्रस्ताव बनाकर भेजना होता है। जब इन संस्थाओं से अनुमति मिल जाती है तो छात्रों को भेजा जाता है।

कनाड़ा से डिग्री और बैंकाक जाएंगे

कनाडा और कृषि विश्वविद्यालय के बीच ड्यूल डिग्री को लेकर समझौता हुआ है। इसके तहत दस छात्र कनाड़ा में दो साल की पढ़ाई करेंगे। इससे उन्हें भारत व कनाडा की ड्यूल डिग्री मिलेगी। इसमें बीएससी की डिग्री प्राप्त करने में छात्रों को एक साल का वक्त अधिक लगेगा। बैंकाक के लिए भी करीब दस छात्रों का चयन हो चुका है।

जिन देशों के साथ अनुबंध हुआ है, वहां पर छात्र नई व आधुनिक तकनीक सीखने के लिए जाएंगे। इसके लिए प्रक्रिया चल रही है। आईसीआर और वर्ल्ड बैंक को प्रस्ताव भेजा गया है। अनुमति मिलते ही छात्र विदेश के लिए रवाना होंगे।

डॉ. संजय शर्मा, डायरेक्टर आफ रिसर्च कृषि विवि

डेयरी व खेती सीखेंगे

कृषि विवि के छात्र अत्याधुनिक तकनीक के प्रयोग से आस्ट्रेलिया में हो रही डेयरी फार्मिंग के बारे में जानेंगे। जबकि फिलिपिंस, मलेशिया व जर्मनी में अत्याधुनिक तकनीक से खेती होती है। वहीं इजराइल परिशुद्धी खेती के लिए जाना जाता है। परिशुद्धी खेती में कृषि उपज को अधिकतम बनाने के लिए उचित समय पर सटीक और उपयुक्त मात्रा में जल, उर्वरक, कीटनाशक आदि आगतों का अनुप्रयोग किया जाता है। सही समय और सही स्थान पर खेत में सही मात्रा में कृषि निविष्टियों का उपयोग करना ही परिशुद्ध खेती है। परिशुद्ध खेती को इसके उपकरणों द्वारा संचालित किया जाता है।

पंजाब, हरियाणा और राजस्थान से मांग हो रही

-नर्मदांचल में बासमती धान के दामों में आया उछाल

देश के साथ विदेश में भी बढ़ी बासमती की डिमांड

नर्मदापुरम। जागत गांव हमार

देश के साथ ही विदेश में भी नर्मदांचल के बासमती चावल की मांग बढ़ी हुई है। इसी कारण क्षेत्र की बासमती धान के दामों में उछाल बना हुआ है। इस मांग की पूर्ति के लिए पंजाब, हरियाणा और कुछ मात्रा में राजस्थान के व्यापारियों की डिमांड बनी हुई है। नर्मदापुरम जिले की सभी प्रमुख मंडियों में बासमती धान की खरीदी तेजी से जारी है। यह आने वाले एक सप्ताह तक इसी तरह बनी रहने की संभावना वरिष्ठ व्यापारी बता रहे हैं। बीते वर्ष बासमती धान की डिमांड कम थी इसी कारण रेट भी कम थे। इस बार शुरू से दाम अच्छे बने हुए हैं। जिले में खरीफ की मुख्य उपज बासमती धान की मांग प्रदेश के बड़े शहरों के अलावा अन्य प्रदेशों में भी बनी हुई है। मुख्यालय की कृषि उपज मंडी में धान की आवक और खरीदी में निरंतर तेजी जारी है। पिछले एक पखवाड़े से बासमती धान की आवक बढ़ने के साथ ही खरीदी भी बढ़ती जा रही है। मंडी में पंजीकृत एक दर्जन से अधिक व्यापारी बोली लगाकर धान की खरीदी कर रहे हैं। जिसे पंजाब, हरियाणा और राजस्थान सहित प्रदेश के बड़े व्यापारियों की मांग पर वहां पहुंचाया जा रहा है। बासमती धान के दाम भी किसानों को तेज मिल रहे हैं। प्रति क्विंटल 3200 रुपए तक में बासमती धान बिक रही है।

बारदानों में भरकर रखी धान

खरीदी के साथ ही व्यापारियों की धान का परिवहन मांग के अनुसार धीरे-धीरे तेज होता जा रहा है। अभी समर्थन मूल्य से धान मोटी धान की खरीदी शुरू नहीं हुई 28 से होना है। तब बासमती की और आवक बढ़ेगी उससे पूर्व व्यापारियों की धान का उठाव जरूरी है।

व्यापारियों को समस्याएं

अनाज व्यापारी राम नवलानी, अजय खन्नाा, अमर सिंह, गोलू राठौर, हरि मीना ने बताया कि मंडी प्रशासन से मांग की गई थी कि उन्हें बारदाने रखने के लिए तथा आफिस संचालन के लिए मिट्टी परिक्षण केंद्र में जगह उपलब्ध कराई जाए, लेकिन मंडी प्रशासन के द्वारा व्यापारियों की सुविधा का ध्यान नहीं रखा गया है।

पूर्व में भी हो चुकीं दिक्कतें | मंडी में समर्थन मूल्य पर खरीदी जाने वाली धान से बीते वर्ष भी मंडी का शेड भर गया था। जगह ही नहीं बच रही थी तब तक प्रशासन धान को केप में रखने का निर्णय नहीं ले सका था। अब इस बार जल्दी ही समस्या आने वाली है। जल्द परिवहन नहीं हुआ तो वही दिक्कत फिर हो सकती है।

ईरान, ईराक में बासमती की मांग बढ़ी हुई है। पंजाब हरियाणा के बड़े व्यापारियों से मांग आ रही है। मंडी में व्यवस्थाओं को बढ़ाया जाना चाहिए। पूर्व सचिव ने कहा था कि मंडी के पंजीकृत व्यापारियों को मंडी में भू-खंड उपलब्ध कराए जाएंगे, लेकिन उनका तबादला हो जाने के बाद उस पर पहल नहीं हो सकी। अब दूसरे मंडी सचिव के आगमन का एक वर्ष से इंतजार है।

अजय कुमार खन्ना, वरिष्ठ व्यापारी

व्यापारियों को मिट्टी परीक्षण केंद्र में कक्ष और बारदाने रखने के लिए जगह की आवश्यकता है। इस बात की जानकारी वरिष्ठ कार्यालय को भेजी जा चुकी है। वहां से अनुमति मिलने पर व्यापारियों के लिए व्यवस्था की जाएगी।

भैयालाल सोनिया, प्रभारी सचिव कृषि उपज मंडी

मोटे अनाजों में छुपा है पोषण का खजाना

डॉ. सत्येंद्र पाल सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र, लहार (भिंड) मप्र

भारत सरकार की पहल पर वर्ष 2023 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष के रूप में घोषित किया गया है। जिसकी शुरुआत एक जनवरी से हो गई है। अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स ईयर के चलते पूरे विश्व में मोटे अनाजों के प्रति किसानों एवं आम नागरिकों में जागरूकता पैदा की जा रही है। भारत सरकार इस दिशा में कई कार्यक्रम आयोजित कर रही है। इसका प्रमुख उद्देश्य लोगों में मोटे अनाजों के प्रति जागरूकता पैदा हो तथा किसान मोटे अनाज की खेती की ओर आगे आएं। भारत में मोटे अनाज वह भूले बिसरे अनाज हैं जिनको किसानों द्वारा भुला दिया गया था, अब एक बार पुन: किसानों को मोटे अनाजों को उगाने के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

भारत के लगभग 21 राज्यों में विभिन्न मोटे अनाजों की खेती की जाती है। जबकि विश्व के 131 देशों में किसी न किसी रूप में मोटे अनाजों की खेती होती है। वर्ष 2019 के आंकड़ों के अनुसार विश्व में अफ्रीका में 489 लाख हेक्टर, अमेरिका में 53 लाख हेक्टर तथा एशिया में 162 लाख हेक्टर में मोटे अनाजों की खेती होती है। जिसमें अकेले भारत में 138 लाख हेक्टर भूमि पर में मोटे अनाजों की खेती की जा रही है। संपूर्ण एशिया एवं अफ्रीका के देशों में 59 करोड लोग आज भी परंपरागत रूप से मोटे अनाज को अपने भोजन में शामिल करते हैं। देश के पांच प्रमुख राज्यों में क्रमश: राजस्थान में बाजरा-ज्वार, कर्नाटक में ज्वार-रागी, महाराष्ट्र में रागी-ज्वार तथा उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा में बाजरा की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

मोटे अनाज स्वास्थ्य और पोषण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए आज मोटे अनाजों को सुपरफूड और पोषक अनाज कहा जा रहा है। बाजरा जैसे मोटे अनाज को भविष्य का अनाज तक कहकर संबोधित किया जा रहा है। भारत में बाजरा, ज्वार, सवा, कुटकी, कोदो, रागी, कंगनी, चीना, कुट्टू एवं चौलाई प्रमुख रूप से, मेजर एवं माइनर मोटे अनाज पैदा किए जाते हैं। मोटे अनाजों से होने वाले स्वास्थ्य लाभ में मिलेट्स अनाज गैर एसिड बनाने वाले गैर ग्लूटीनस अत्यधिक पौष्टिक और आसानी से पचने वाले खाद्य पदार्थ हैं। बाजरा कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स जीआई से मुक्त होने के कारण यह लंबे समय तक ग्लूकोज की धीमी रिलीज में मदद करता है जिससे मधुमेह के जोखिम को कम किया जा सकता है। सीलिएक रोग से पीड़ित व्यक्ति आसानी से विभिन्न प्रकार के बाजरा को अपने भोजन में शामिल कर सकते हैं। बाजरा कैल्शियम, आयरन, जिंक, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, पोटेशियम जैसे खनिजों का समृद्ध स्रोत होता है। इसमें आहार फाइबर और विटामिन जैसे फोलिक एसिड, विटामिन बी-6, बीटा कैरोटीन और नियासिन की प्रशंसनीय मात्रा पाई जाती है। उच्च मात्रा में लेसिथिन की उपलब्धता तंत्रिका तंत्र को मजबूत करने के लिए उपयोगी होती है। इसलिए बाजरे के नियमित सेवन से कुपोषण को दूर करने में काफी हद तक मदद मिल सकती है। हालांकि बाजरा टैनिन, फाइटोस्टेरॉल, पॉलीफेनोल्स और एंटीऑक्सीडेंट जैसे फाइटोकेमिकल्स से भरपूर होते हैं, लेकिन इनमें कुछ पोषण विरोधी तत्व होते हैं जिन्हें प्रसंस्करण के माध्यम से कम किया जा सकता है। बाजरा में अनुकूलन की व्यापक क्षमता होती है क्योंकि वह आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्र से लेकर उत्तर पूर्वी राज्यों और उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों के मध्यम ऊंचाई तक आसानी से पैदा हो सकते हैं। बाजरा नम, रेतीली बंजर भूमि में आसानी से उगाया जा सकता है।

बाजरा मोटे अनाजों की श्रेणी में आता है, लेकिन इसके पोषण संबंधी लाभ के कारण इसे आज पोषक अनाज भी कहा जा रहा है। बाजरा में प्रोटीन, खनिज और विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। बाजरा पोषण की दृष्टि से चावल और गेहूं से 3 से 5 गुना बेहतर है। बाजरा विटामिन-बी, कैल्शियम, आयरन, पोटेशियम, मैग्नीशियम, जिंक और ग्लूटेन फ्री होता है। जिन लोगों को गेहूं से एलर्जी होती है उनके लिए बाजरा एक आदर्श भोजन है। वजन कम करने वाले एवं मधुमेह रोगियों के लिए भी बाजरा उपयुक्त होता है।

पोषण के दृष्टिकोण से रागी भी एक महत्वपूर्ण छोटा मोटा अनाज है। फिटनेस के प्रति उत्साही लोगों द्वारा चावल और गेहूं

के विकल्प के रूप में रागी का सेवन किया जा सकता है। यह प्रोटीन और अमीनो एसिड से भरपूर बाजरा का ग्लूटेन फ्री प्रकार है। बच्चों में रागी का सेवन उनके मस्तिष्क के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। रागी में कैल्शियम, आयरन एवं खनिज लवणों की मात्रा पाई जाती है। रागी एंटी ऑक्सीडेंट होने के कारण आवश्यक अमीनो एसिड की मात्रा प्रदान करती है।

ज्वार का प्रयोग रोटियां और अन्य ब्रेड बनाने के लिए भारत में कई राज्यों में किया जाता है। ज्वार आयरन, प्रोटीन और फाइबर का एक समृद्ध स्रोत होता है। ज्वार में पोलिकोसेनॉल्स की उपस्थिति के कारण यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करता है। ज्वार में ब्लूबेरी और अनार की तुलना में अधिक एंटी ऑक्सीडेंट पाए जाते हैं। यह कैलोरी और मैक्रोन्यूट्रिएंट्स से भरपूर होता है। ज्वार मेटाबॉलिज्म को बढ़ाने में मदद करता है।

फॉक्सटेल मिलेट जिसे भारत में ककुम या कंगनी के नाम से भी जाना जाता है। यह कार्बोहाइड्रेट से भरपूर होता है, जो शरीर में रक्त शर्करा के स्तर को संतुलित करने में मदद करता है। इसमें आयरन की प्रचुर मात्रा पाई जाती है। यह समग्र प्रतिरक्षा के सुधार में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

कुटकी एक लिटिल मिलेट्स की श्रेणी में आता है। यह विटामिन बी, कैल्शियम, आयरन, जिंक, और पोटेशियम जैसे आवश्यक खनिजों से परिपूर्ण होता है। लिटिल मिलेट्स कुटकी का उपयोग भारत के दक्षिणी राज्यों में कई पारंपरिक व्यंजनों को बनाने में बड़े पैमाने पर किया जाता है। यह चावल का एक स्वास्थ्यवर्धक विकल्प है और इससे वजन भी नहीं बढ़ता है।

बरनार्ड बाजरा जिसे सवा अथवा सनवा के नाम से भी जाना जाता है। यह उच्च मात्रा में आहार फाइबर से भरा होता है जो कि आंतों को बेहतर बनाने और वजन घटाने में काफी सहायता करता है। सवा कैल्शियम और फास्फोरस से भी भरपूर होता है जिससे हड्डियों को मजबूती प्रदान होने में सहायता मिलती है।

प्रोसो मिलेट को भारत में चीना के नाम से जाना जाता है। यह रक्त शर्करा के स्तर को संतुलित करने में मदद करता है क्योंकि इसमें कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है। इसको मधुमेह रोगियों के लिए दैनिक आहार में शामिल करना एक अच्छा विकल्प है।

कोदो मिलेट को कोदों के नाम से ही जाना जाता है। यह लेसिथिन अमीनो एसिड की उच्च मात्रा वाला मोटा अनाज है। यह तंत्रिका तंत्र को मजबूती प्रदान करता है। कोदो अन्य विटामिन और खनिजों के बीच विटामिन बी, विशेष रूप से नियासिन, बी-6 और फोलिक एसिड का एक शानदार स्रोत है। इसमें कैल्शियम, आयरन, पोटेशियम, मैग्नीशियम और जिंक जैसे मिनरल्स होते हैं। यदि इसका पोस्टमेनोपॉजल महिलाओं द्वारा नियमित रूप से सेवन किया जाए तो यह उनके उच्च रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल के स्तर जैसे हृदय संबंधी विकारों से छुटकारा दिलाने में मदद करता है।

बकव्हीट जिससे भारत में कुट्टू के नाम से भी जाना जाता है। यह मिलेट्स अनाजों के सबसे आम प्रकारों में से एक है। भारत में अक्सर नवरात्र और अन्य उपवासों के दौरान इसका उपयोग फलाहार के लिए किया जाता है। कुट्टू मधुमेह के अनुकूल है और रक्तचाप को कम करने में भी मदद करता है। यह अच्छे हृदय स्वास्थ्य के लिए भी सहायक है और यदि आप अपना वजन कम करना चाहते हैं तो इसे अपने आहार में शामिल करना चाहिए। कुट्टू के सेवन से स्तन कैंसर, बच्चों में अस्थमा और पित्त की पथरी से भी बचाव होता है।

चौलाई एक तरह का बाजरा ही है जो मिलेट्स की श्रेणी में आता है। इसे राजगिरा, रामदाना, और चोला के नाम से भी जाना जाता है। चौलाई प्रोटीन और आहार फाइबर से भरपूर है। स्वस्थ आहार के लिए यह एक बहुत ही अच्छा स्रोत है। यह बालों को सफेद होने और झड़ने से रोखने में मदद करता है। चौलाई के नियमित सेवन से कोलेस्ट्रॉल के स्तर और हृदय रोग के जोखिम को भी कम किया जा सकता है। इसमें कैल्शियम, विटामिन और अन्य खनिज काफी मात्रा में पाये जाते हैं।

फसल विविधीकरण: किसानों की कई समस्याओं का समाधान

संजय माकवे
प्रगतिशील किसान

पारंपरिक धान-गेहूं फसल प्रणाली की जगह फसल विविधीकरण को अपनाकर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के अधिक दोहन को कम किया जा सकता है। इसके साथ ही साथ इससे आमदनी में भी बढ़ोतरी कर सकते हैं। सिंधु-गंगा के मैदानी इलाकों में संभावित विकल्प के रूप में मक्का-सरसों-मूंग एवं मक्का-गेहूं-मूंग फसल प्रणाली से उत्पादन की लागत में 15-25 प्रतिशत की कमी एवं 20-35 प्रतिशत कुल आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। इस प्रणाली से 65 से 70 प्रतिशत सिंचाई जल की बचत भी कर सकते हैं। फसल विविधीकरण से कार्बन का संचय एवं मृदा की उर्वराशक्ति बनी रहती है।

सिंधु-गंगा के उत्तर-पश्चिमी मैदानी इलाकों में धान-गेहूं फसल एक प्रमुख फसल प्रणाली है। यह लगभग 10.3 मिलियन हैक्टर में फैली हुई है। भारत के कुल खाद्यान्न का लगभग 30 प्रतिशत अनाज इसी क्षेत्र की धान-गेहूं फसल प्रणाली से आता है। निरंतर घटते कृषि संसाधनों एवं जलवायु परिवर्तन की स्थिति में बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्य मांग के लक्ष्य को पूरा करना एक बड़ी चुनौती है। भारत सरकार द्वारा वर्ष 2022 तक देश के किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य रखा गया है। देश में बढ़ती कृषि लागत, श्रम, ऊर्जा और जल की कमी के साथ ही साथ खाद्य उत्पादों के मूल्यों में

अत्यधिक उतार-चढ़ाव, मौसमी और कम समय के लिए मूल्य वृद्धि और अनियमित मानसून को देखते हुए कृषि क्षेत्र में शामिल सभी हितधारकों के लिए यह एक कठिन चुनौती है। पारंपरिक धान की खेती में ज्यादा संसाधनों (पानी, श्रम तथा ऊर्जा) की आवश्यकता होती है। सिंधु-गंगा के मैदानी क्षेत्रों में संसाधनों की लगातार हो रही कमी के कारण धान का उत्पादन पहले की तुलना में कम लाभप्रद हो गया है।

फसल विविधीकरण के विभिन्न विकल्प: पारंपरिक धान-गेहूं प्रणाली की जगह किसान विभिन्न फसल प्रणाली विकल्प अपना सकते हैं, जो इस प्रकार हैं:

मक्का-सरसों-मूंग, मक्का-गेहूं, मक्का-गेहूं-मूंग, धान-आलू-स्प्रिंग मक्का, सोयाबीन-गेहूं-मूंग, अरहर-गेहूं, अरहर-गेहूं-मूंग।

कृषि के सतत सघनीकरण को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न विकल्पों जैसे संरक्षित खेती आधारित फसल प्रबंधन, फसल विविधीकरण, दलहनी फसलों को रिले एवं अंतर्वर्तीय फसल के रूप में शामिल करने, समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने आदि तकनीकियों पर प्रचार व प्रसार की नितांत आवश्यकता है। मौजूदा कृषि प्रणालियों में उभरती चुनौतियों एवं खाद्यान्नों की बढ़ती मांग के मद्देनजर कृषि प्रणालियों में विविधीकरण को अहम भूमिका अदा करनी होगी।

परपंरागत फसल प्रणाली से नुकसान: पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में धान के बाद लगभग 95 प्रतिशत क्षेत्रफल में गेहूं की खेती की जाती है। धान और गेहूं की लगातार खेती से बहुत सी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। इसमें भूमिगत जल प्रतिवर्ष 0.1 से 1 मीटर तक नीचे जा रहा है, जो कि आने वाले समय में एक बड़ा संकट है।

मृदा स्वास्थ्य में लगातार गिरावट: धान व गेहूं दोनों ही अदलहनी फसलें है। इनकी पोषक तत्व मांग भी अधिक है। इस पद्धति के लगातार अपनाने से बहुत सारे प्रमुख एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी मृदा में होती जा रही है। इसके साथ ही कार्बनिक पदार्थ की कमी व मृदा से पोषक तत्वों का निक्षालन होने से मृदा उर्वरता में भी कमी आ रही है।

फसल उत्पादन लागत में वृद्धि: लगातार एक ही प्रकार की फसल उगाने से विभिन्न आदानों/संसाधनों जैसे-उर्वरक, पीड़कनाशी आदि की दक्षता में कमी आ रही है, जिसके कारण प्रति इकाई उत्पादन लागत में वृद्धि हो रही है।

पर्यावरण प्रदूषण: पंजाब व हरियाणा राज्यों में धान की कटाई के बाद फसल अवशेष को खेत में जला दिया जाता है। इससे काफी मात्रा में वायु प्रदूषण के साथ-साथ मृदा में उपस्थित पोषक तत्वों की हानि होती है। धान के खेत से जलमग्न दशा में मीथेन गैस निकलती है, जिसका वैश्विक तापमान बढ़ाने में प्रमुख योगदान है।

चुनौतियों से भरा है भारत में कृषि क्षेत्र

भारत में कृषि एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। यह सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 18.5प्रतिशत हिस्सा है और देश के कुल कार्यबल के 58प्रतिशत से अधिक को रोजगार प्रदान करता है। भारत विश्व में खाद्यान्न का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और दालों, चावल, गेहूँ, फलों और सब्जियों का अग्रणी उत्पादक है। भारत में कृषि उत्पादन काफी हद तक सिंचाई के लिए मानसून की बारिश पर निर्भर है। भारत सरकार ने आधुनिक कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने और फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए विभिन्न पहलों को लागू किया है। इनमें प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, परम्परागत कृषि विकास योजना और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन शामिल हैं। सरकार ने कृषि विस्तार कर्मियों के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज) की भी स्थापना की है। इससे आधुनिक कृषि पद्धतियों को फैलाने और अधिक टिकाऊ कृषि क्षेत्र बनाने में मदद मिली है। सरकार ने कृषि जिंसों के ऑनलाइन व्यापार को बढ़ावा देने और किसानों को अपनी उपज बेचने के लिए एक पारदर्शी मंच प्रदान करने के लिए ई-नाम (राष्ट्रीय कृषि बाजार) पहल भी शुरू की है। इन प्रयासों के बावजूद भारत का कृषि क्षेत्र अभी भी कई चुनौतियों से प्रभावित है। जैसे कम उत्पादकता, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा और ऋण तक सीमित पहुँच। देश को कृषि विस्तार सेवाओं और अन्य संबंधित सेवाओं जैसे मिट्टी परीक्षण और फसल सलाह की उपलब्धता में भी भारी अंतर का सामना करना पड़ रहा है। पूरी आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार ने कृषि क्षेत्र को मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसी विभिन्न योजनाएं शुरू की हैं। भारत में जलवायु परिवर्तन भारत में कृषि मौसम आधारित होती है। जलवायु परिवर्तन के कारण फसलों के नष्ट हो जाना एक प्रमुख समस्या है। मौसम परिवर्तन के कारण सूखी जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। समय पर वर्षा नहीं होने के कारण या भारी वर्षा होने के कारण फसलों को काफी नुकसान होता है। इस समस्या से कृषि और इससे जुड़े लोगों को भी काफी गहरा नुकसान होता है। सिंचाई के पर्याप्त व्यवस्था ना होना भारतीय कृषि जो मानसून आधारित होती है। पर्याप्त सिंचाई की व्यवस्था नहीं होने के कारण किसानों को उसके उत्पादन के लिए मौसम पर पूरी तरह से निर्भर रहना पड़ता है। भारत में जैविक खेती का ना होना एक प्रमुख समस्या है। भारत में खेती और उससे जुड़े कार्य बहुत अधिक खर्चीला है, जिस कारण भारत में जैविक कृषि के लिए जागरूकता की कमी एवं किसानों को आत्मनिर्भर ना होना साथ ही साथ किसानों के आर्थिक रूप से पिछड़ा होना इसका एक महत्वपूर्ण कारण है। भंडारण और बाजारों की कमी खाद्य उत्पादों के उत्पादन के पश्चात उसके भंडारण एवं उसे बचाने के लिए व्यापक बाजारों में कमी इसने कृषि से जुड़े लोगों को कृषि के मोह भंग होता जा रहा है लोगों के द्वारा उत्पादित वस्तुओं को बेचने के लिए वैकल्पिक बाजार की समस्या का सामना करना पड़ता है।

लोगों के स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद

अब खेतों में लहराएगी जैविक काली धान

तीन गुना अधिक काला धान का दाम

भोपाल। जागत गांव हमार

खाद्यान की पैदावार में अग्रणी होते जा रहे नर्मदापुरम जिले में परंपरागत खेती से हटकर अब किसानों का रुझान अलग तरह की खेती की ओर भी बढ़ता जा रहा है। लगातार एक दशक से बासमती धान की पैदावार कर मुनाफा कमाने वाले किसानों का ध्यान अब काली धान की ओर भी बढ़ रहा है। स्वाद के साथ सेहत के गुणों की खान कहे जाने वाले काला धान की खेती इस बार से शुरू हो चुकी है। नर्मदा तट के डोंगरवाड़ा गांव के प्रगतिशील किसान ब्रजेश मिश्रा व अन्य किसानों के द्वारा पहली बार काला धान की बोवनी की गई थी। जिसकी पैदावार अच्छी होने पर किसानों में प्रसन्नता है। उनकी धान की फसल को कई किसान देखने के लिए उनके खेत में पहुंचे हैं। जो अब अगली बार काले धान लगाने का मन बना रहे हैं। प्रयोग के तौर पर पहली बार जैविक काली धान लगाने के बाद जब पैदावार अच्छी हुई तो डोंगरवाड़ा गांव में किसानों ने हर्ष व्यक्त किया है। बृजेश मिश्रा पहले किसान हैं जिन्होंने पूर्व में काला गेहूं की पैदावार की थी उसके बाद तीन एकड़ में उन्होंने काला धान की खेती करके सफल हुए हैं।

खेती में लागत बढ़ती जा रही है। किसान लाभकारी मूल्य चाहते हैं, लेकिन उन्हें जो दाम मिलते हैं उससे सिर्फ खर्च निकलता है जो फायदा होना चाहिए उसमें कमी मेहसूस की जाती है। क्योंकि बीज, खाद,कटाई तथा रखरखाव में बहुत खर्च हो जाता है। ऐसी स्थिति में अधिक दाम देने वाली उपज की ओर किसान अग्रसर हो रहे हैं।

300 से 400 रुपए किलो चावल

काली धान से किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। क्योंकि काला धान सामान्य धान की अपेक्षा कई गुना महंगा बिकता है। बाजार में इसका चावल 300 से लेकर 400 रुपए किलो तक बिकता है। वहीं विदेशों में भी इस चावल की काफी मांग है। इसकी पैदावार सामान्य धान की तुलना में कम होती है।

शुगर की बीमारी में भी फायदेमंद

वर्तमान में शुगर की बीमारी हर घर में पहुंच रही है। उन्हें सादे चावल खाने का परहेज बताया जाता है। ऐसी स्थिति में काला चावल का सेवन किया जा सकता है। इसलिए भी काला चावल लोगों की पहली पसंद बनता जा रहा है। काला चावल में प्रचुर मात्रा में एंटी कैंसरस तत्व भी पाए जाते है। इस धान से निकले चावल में विटामिन बी, ई के अलावा कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन तथा जिंक आदि प्रचूर मात्रा में मिलता है।

इसके सेवन से रक्त शुद्धीकरण भी होता है। साथ ही इस चावल के सेवन से चर्बी कम करने तथा पाचन शक्ति बढ़ने की बात कही जा रही है। जो कई तरह से फायदेमंद बताया जा रहा है।

मैंने पहली बार काला धान लगाई उसकी पैदावार अच्छी हुई है। एक दो साथियों ने भी कम मात्रा में लगाई थी। भाव भी अच्छे मिल रहे हैं। धान कटने से पहले ही बुकिंग हो चुकी थी। इसलिए अगली बार में दो गुना रकबे में काला धान लगाउंगा। अन्य नई फसलों को भी लगाने का मूंड है।

- बृजेश मिश्रा, किसान

डोंगरवाड़ा गांव के किसान कुछ हट कर खेती करते हैं। परंपरागत खेती से हटकर भी प्रयोगात्मक खेती करना चाहिए। पहले कम मात्रा में लगाकर मुनाफा अच्छा होने पर उसकी मात्रा बढ़ाना चाहिए। इस बार काला धान लगाया गया था। जिसकी पैदावार अच्छी हुई है।

- जेआर हेडाउ, उप संचालक कृषि

काला चावल में एंटीआक्सीडेंट भरपूर गुण होते हैं। इसमें काफी से भी ज्यादा एंटी आक्सीडेंट पाया जाता है। एंटी आक्सीडेंट से शरीर को डिटाक्स और क्लीन करने का काम करता है। आज के प्रदूषित वातावरण और मिलावटी खाद्य सामग्री से जंग लड़ने के लिए हर इंसान को जरूरत है।

डॉ. एके शर्मा, कृषि वैज्ञानिक

31 मार्च तक काम पूरा कराने का लक्ष्य तय किया

-सरोवरों से धरा पर अमृत वर्षा का सपना अधूरा, संस्कारधानी में 101 अमृत-सरोवर प्रस्तावित

जबलपुर में अब तक बने सिर्फ 56 अमृत सरोवर

जबलपुर। जागत गांव हमार

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत केंद्र सरकार के आह्वान पर जिले में सौ से ज्यादा अमृत-सरोवरों का निर्माण कराया जा रहा है। इनके निर्माण कार्य की डैडलाइन लगातार आगे सरकती जा रही, लेकिन काम की रफ्तार बहुत धीमी है। फिलहाल 31 मार्च 2023 तक काम पूरा कराने का लक्ष्य तय किया गया है। इस तरह से बमुश्किल ढाई महीने ही बचे हैं, लेकिन काम की पूर्णता का प्रतिशत 55 के आस-पास ही है। यद्यपि अधिकारी सत्रांत तक लक्ष्य प्राप्त कर लेने की बात कह रहे हैं। मोदी सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक अमृत-सरोवर योजना है। इसके पीछे की सोच यह रही है कि इस माध्यम से बरसाती पानी को एक जगह रोक कर रखा जा सके और जरूरत पड़ने पर उसका उपयोग सिंचाई व अन्य प्रकार की जल-जरूरतों के रूप में किया जा सके।

जिले में रहा 101 का लक्ष्य- जिले में इस योजना के तहत पहले 63 अमृत-सरोवरों का लक्ष्य तय किया गया था, जिसे कुछ समय बाद बढ़ाकर 101 कर दिया गया था। इन सभी के लिए तकनीकी और प्रशासनिक स्वीकृति भी समय पर हासिल की जा चुकी है। निर्माण कार्य के लिए राशि भी जारी की जा चुकी है। पूरा अमला काम में गति लाने के लिए हाथ-पांव मार रहा है। जिला पंचायत सीईओ डॉ. सलोनी सिडाना भी गांवों का दौरा कर पंचायतों के जिम्मेदारों को कार्रवाई में तेजी लाने के लिए हिदायत दे चुकी हैं।

गति में बहुत तेजी नहीं आ पाई

सरोवरों के काम की गति में बहुत तेजी नहीं आ पाई। अब तक जिले में 56 सरोवरों का ही निर्माण कार्य पूरा हो पाया है। निर्माण पर आठ करोड़ अठासी लाख रुपए खर्च किए जा चुके हैं। हालांकि कुल 101 निर्माण कार्यों के लिए 17 करोड़ 49 लाख जारी किए गए हैं। 20 सरोवर ऐसे हैं जिनका निर्माण कार्य 50 प्रतिशत से अधिक पूर्ण हो चुका है। अफसरों को भरोसा है कि 15 अगस्त तक शत-प्रतिशत सरोवरों का काम पूरा हो सकता है।

कहां कितने बनने हैं, कितने बने

जबलपुर जिले आठ विकासखंडों में 101 अमृत-सरोवर बनने हैं, जिनमें से 56 बन पाए हैं। विकासखंड जबलपुर-बरगी में 10 बनने थे, जिनमें से चार बन पाए हैं। कुंडम में 21 बनने थे, जिनमें से आठ बने हैं। मझौली में 26 बनने थे, जिनमें से 17 बन चुके हैं। पनागर में छह बनने थे, जिनमें से चार ही बन पाए हैं। पाटन में पांच प्रस्तावित रहे, जिनमें से तीन, शहपुरा में 19 बनने थे, जिनमें से 13 और सिहोरा में 14 बनने थे, जिनमें से सात ही बन पाए हैं।

इस योजना के क्रियान्वयन में परिस्थितियां, मौसम और स्थल चयन की परेशानी का बड़ा प्रभाव पड़ा। बावजूद इसके अब तक 101 में से 56 सरोवरों का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। शेष भी सत्रांत तक पूरे हो सकते हैं।

-मनोज सिंह, एसीईओ-जिला पंचायत, जबलपुर

-दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. एसपी सिंह बोले

एक देसी गाय से तीस एकड़ में होगी प्राकृतिक खेती

लहार। जागत गांव हमार

प्राकृतिक कृषि परियोजना अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र लहार में एक दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में प्राकृतिक कृषि के प्रति इच्छुक जिले के विभिन्न विकास खंडों के किसानों द्वारा भाग लेकर प्राकृतिक कृषि की बारीकियों को समझा गया। इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्राकृतिक कृषि में काम आने वाले विभिन्न उत्पादों को प्रशिक्षण के दौरान बनाकर दिखाया गया। प्रशिक्षण का शुभारंभ करते हुए केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एसपी सिंह ने कहा कि आज पूरी दुनिया में तीन तरह की कृषि पद्धतियां प्रचलन में हैं। जिसमें रासायनिक कृषि, जैविक कृषि एवं प्राकृतिक कृषि प्रमुख हैं। आज पूरे देश में अधिकांश किसान रासायनिक कृषि कर रहे हैं। जिसमें बड़े पैमाने पर रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का प्रयोग किया जा रहा है। रासायनिक उर्वरकों से मृदा स्वास्थ्य खराब होने के साथ ही खेती में प्रयोग किए जा रहे कीटनाशक अत्यंत घातक और जहरीले हैं जिससे स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव देखने को मिल रहा है। इसका दुष्प्रभाव धरती के स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है। जबकि जैविक कृषि में बहुत बड़े पैमाने पर गोबर की खाद अथवा केंचुआ की खाद की आवश्यकता होती है। जैविक कृषि में जहां एक एकड़ खेती के लिए 30 गायों की आवश्यकता होती है। वही प्राकृतिक कृषि में 30 एकड़ भूमि के लिए मात्र एक देशी गाय पर्याप्त होती है। देसी गाय के एक ग्राम गोबर में 300 से लेकर 500 करोड़ तक सूक्ष्म जीवाणु पाए जाते हैं। यह जीवाणु धरती के स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक है। प्राकृतिक कृषि में तैयार होने वाले उत्पाद देशी गाय के गोबर गौ-मूत्र तथा पेड़ पौधों की पत्तियां आदि से तैयार करके प्रयोग किए जाते हैं। डॉ. सिंह ने बताया कि प्राकृतिक कृषि भविष्य की खेती है। आने वाला समय प्राकृतिक कृषि का ही है। इसलिए समय की मांग है किसान आगे और प्राकृतिक कृषि को अपनाएं।

प्राकृतिक कृषि का अहम स्थान

उद्यान विशेषज्ञ डॉ. करणवीर सिंह ने बताया कि उद्यान की फसलों में भी प्राकृतिक कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। प्राकृतिक कृषि के उत्पादों से फल सब्जी तथा फूल की खेती में अच्छा लाभ कमाया जा सकता है। वहीं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अवधेश सिंह द्वारा प्राकृतिक कृषि का रासायनिक कृषि और जैविक कृषि से तुलनात्मक अध्ययन के बारे में किसानों को जानकारी दी। वैज्ञानिक डॉ. एनएस भदोरिया ने बीज उत्पादन में प्राकृतिक कृषि की उपयोगिता की किसानों को जानकारी दी।

-सुदूर पहाड़ी क्षेत्र के किसानों ने कलेक्टर को फल भेंट किए

अब किसानों के लिए टंटया मामा और बिरसा मुंडा योजना के प्रोजेक्ट बनेंगे

खरगोन। जागत गांव हमार

आत्मा परियोजना के तहत नवाचार गतिविधि के अंतर्गत झिरन्या के सुदूर पहाड़ी क्षेत्र कोठा बुजुर्ग और मुर या गांव के किसानों ने नई फसल के साथ प्रयोग किए हैं। दोनों गांवो के किसानों ने अपने खेतों में उपजी स्ट्रॉबेरी और थाई पिंक अमरूद भेंट किए। इस दौरान किसान संजय सिलदार, विजय पन्नालाल, नरसिंह बूटा और नहाडी काशीराम ने कलेक्टर कृषि की तैयारियों और तकनीक के बारे में बताया गया। कलेक्टर कुमार पुरूषोत्तम ने कृषि उपसंचालक एमएल चौहान व आत्मा परियोजना के अधिकारियों को ऐसे किसानों को चिन्हांकित कर टंटया मामा आर्थिक कल्याण योजना और भगवान बिरसा मुंडा स्वरोजगार योजना में प्रोजेक्ट बनाकर योजना से जोड़ने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि नवाचार करने वाले किसानों को कृषि को लाभ का धंधा बनाने के लिए प्रेरित करें। इस दौरान आत्मा उप परियोजना उपसंचालक डॉ. मना सोलंकी, सहायक संचालक दीपक मालवीय, बीटीएम अनिल मौजूद थे।

डिंडोरी के 82 वनग्राम को राजस्व ग्राम, पर नहीं मिलेगी भू-अधिकार

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश सरकार ने वन ग्रामों को राजस्व ग्राम का दर्ज देने की डिंडोरी से शुरुआत तो कर दी है, लेकिन वहां के वनवासियों को भूमि का विधिवत मालिकाना हक नहीं मिल सकेगा। इन परिवर्तित ग्रामों में किसी भी निवासी को भू-अधिकार पुस्तिका या ऐसा कोई अन्य अभिलेख या उसकी प्रति जारी नहीं की जाएगी, जिससे कि वे बैंक से ऋण ले सकें या उसका व्यावसायिक उपयोग कर सकें। इतना ही नहीं, इन ग्रामों के निवासी अपनी भूमि का विक्रय भी नहीं कर सकेंगे और न दान में दे सकेंगे। सरकार ने 827 वन ग्रामों में से डिंडोरी के 82 वन ग्रामों को पहले चरण में राजस्व ग्राम बना दिया है। इनमें समनापुर विकासखंड के 16, करंजिया के 25, डिंडोरी के आठ, अमरपुर के नौ, बजाग के पांच, शहपुरा के सात और विकासखंड मेहंदवानी के 12 वन ग्रामों को राजस्व ग्राम में बदला गया है। हालांकि, राजस्व ग्राम का दर्जा मिलने से इन ग्रामों में विकास कार्य किए जा सकेंगे और यहां के निवासी मूलभूत सुविधाओं से लाभान्वित हो सकेंगे।

शाह ने की थी घोषणा

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मई 2022 में जंबूरी मैदान भोपाल में वनवासी सम्मेलन को संबोधित करते हुए मध्य प्रदेश के वन ग्रामों को राजस्व ग्राम बनाने की घोषणा की थी। इसके बाद कैबिनेट में 26 मई 2022 को 827 वन ग्रामों को राजस्व ग्राम में बदलने का निर्णय लिया था।

पटवारी हल्का में करेंगे शामिल

राजस्व ग्रामों के राजस्व भू-अभिलेख तैयार किए जाएंगे तथा इन्हें निकटतम पटवारी हल्के में शामिल किया जाएगा। राजस्व अभिलेखों में इन परिवर्तित ग्रामों के भू-धारकों को वनाधिकार धारक कहा जाएगा। इन भूमियों में नामांतरण सिर्फ परिवार के लोगों में ही किया जा सकेगा। प्रत्येक वनाधिकार धारक की भूमि का सीमांकन भी किया जाएगा। जब वन विभाग विधि अनुसार इन परिवर्तित ग्रामों का निर्वनीकरण करेगा, तब इन परिवर्तित ग्रामों में भूमि की खरीद-फरोख्त अन्य राजस्व ग्रामों की तरह हो सकेगी।

-फल-सब्जी प्रशिक्षण में डॉ. अजय कुमार ने कहा

कृषि उपज मूल्य संवर्धन रोजगार का उत्तम साधन

रीवा। जागत गांव हमार

फलों और सब्जी के प्रसंस्करण व परिरक्षण द्वारा बिन मौसम के भी फल-सब्जी की उपलब्धता और परिवार का पोषण सुनिश्चितिकरण साथ में धनोपार्जन के लिए कृषि उत्पाद प्रसंस्करण उद्योग स्थापन के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। यह बात कृषि विज्ञान केंद्र रीवा के प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार पांडेय ने कही। उनके दिशा-निर्देशन में ग्राम देवरा में तीन दिवसीय फल-सब्जी प्रसंस्करण एवं परिरक्षण व्यवसायिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। जिसमें संचालक विस्तार सेवाएं, डॉ. डीपी शर्मा का निर्देशन में तथा कृषि कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ.एसके पयासी का मार्गदर्शन रहा। प्रशिक्षण में 33 प्रतिभागी मौजूद थे। प्रशिक्षण के दौरान खाद्य वैज्ञानिक डॉ. चंद्रजीत सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों को बताया कि फल-सब्जियों में चूंकि जलांश अधिक होता है, अतः वायु के संपर्क में यह शीघ्र ही अखाद्य अवस्था में परिवर्तित हो जाता है, जो कि आर्थिक हानि का कारण बनता है। इन्हें बचाने के लिए नमक, शक्कर, तेल और सिरका जैसे प्राकृतिक और सोडियम बेंजोएट, पोटेशियम मैटा बाय सल्फाईट जैसे रासायनिक परिरक्षकों की सहायता ली जाती है। डॉ. किंजल्क सी सिंह, वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) ने बताया कि प्रशिक्षणार्थियों ने आंवले का किसा मुरब्बा, खड़ा मुरब्बा, लड्डू, सुपारी, कैंडी, अचार, रस, अमरूद की जैली और टॉफी, नींबू का रसीला खट्टा मीठा अचार, नींबू के छिल्के की खट्टा और नमकीन अचार, शर्बत, पपीते की टूटी-रूटी, आलू के चिप्स, बरिहा (भूरा कद्दू) से पेठे, अलसी से माऊथ फ्रैशनर का निर्माण, पैकिंग, लाईसैंसिंग और विपणन सीखा।

उत्पादों का सफल गुणवत्ता परीक्षण किया

वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) डॉ. अखिलेश कुमार पटेल, वैज्ञानिक (उद्यानिकी) डॉ. राजेश सिंह, वैज्ञानिक (शस्य) डॉ. बृजेश तिवारी, वैज्ञानिक (कीट शास्त्र) डॉ. अखिलेश कुमार, वैज्ञानिक (शस्य) डॉ. स्मिता सिंह, वैज्ञानिक (पौध सुरक्षा) डॉ.केवल सिंह बघेल, वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) डॉ. संजय कुमार सिंह, वैज्ञानिक (कंप्यूटर विज्ञान) मृत्युंजय कुमार मिश्रा, केंद्र के मौसम वैज्ञानिक संदीप शमा, श्रीमति मंजू शुक्ला तथा कार्यालय सहयोगी बृजेश सेन ने तैयार उत्पादों का सफल गुणवत्ता परीक्षण किया।

-जागत गांव हमार बता रहा कब-कैसे करें बोवनी

गर्मी में मूंग की खेती किसानों के लिए साबित होगी बरदान

भोपाल। जागत गांव हमार

कम समय में अधिक फायदा देने वाली फसल की बात की जाए, तो सबसे पहले गर्मी में बोई जाने वाली मूंग का ख्याल आता है। उत्तर भारत के सिचिंत क्षेत्र में चावल-गेहूं फसल प्रणाली में ग्रीष्मकालीन मूंग का रकबा बढ़ाने की अपार सभावनाएं है। जिन क्षेत्रों में सिंचाई की पूर्ण सुविधा है वहां पर किसान गेहूं, सरसों, चना, मटर, आलू आदि फसल के बाद ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती करके अल्प अवधि में अधिक आर्थिक लाभ अर्जित कर सकते हैं।

जीरो ड्रिल या हैप्पी सीडर का प्रयोग- ज्यादातर किसान गेहूं की कटाई के उपरांत आगामी ग्रीष्मकालीन मूंग की बोवनी के लिए परंपरागत तरीकों से खेत को तैयार कर फसल बोने मे 15 से 20 दिन का समय लग जाता है। जिसके फलस्वरूप फसल की कटाई वर्षा आने से पहले नहीं होती है। इस बहुमूल्य समय की बचत करने के लिए जीरो ड्रिल या हैप्पी सीडर का प्रयोग कर खेत में बगैर जुताई किए ग्रीष्मकालीन मूंग की बोवनी के समय पर आसानी से की जा सकती है।

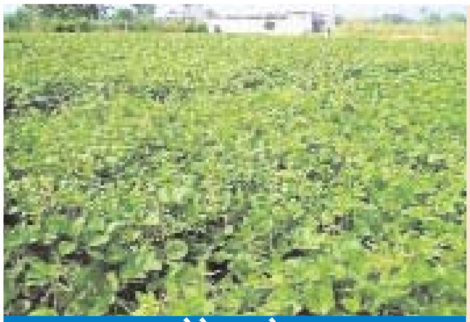

समय पर बोने पर बढ़ेगा उत्पादन

गेहूं की कटाई के उपरांत जीरो ड्रिल या हैप्पी सीडर मशीन द्वारा बोवनी करने से लगभग 10 दिनों की बचत की जा सकती है। धान गेहूं फसल प्रणाली में मूंग की रिले अतरवर्ती फसल बुवाई करने के लिए 10 से 15 दिन तक के मूल्यवान समय की बचत की जा सकती है तथा इसमें उचित समय पर बोवनी हो जाने से उत्पादकता में वद्धि एवं लागत में कमी आती है। मृदा में सरंक्षित नमी का बेहतर उपयोग होता है। साथ ही खेत की तैयारी के लिए ट्रैक्टर में प्रयक्तु होने वाले डीजल की बचत होती है। धान- गेहूं फसल चक्र वाले क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती करने से भूमि की उर्वरता शक्ति में सुधार किया जा सकता है।

कैसे करें ग्रीष्मकालीन मूंग की बोवनी

पूर्व अंकुरित मूंग के बीजों को गेहूं में आखिरी पानी देने के समय छिड़काव करके। मूंग के बीजों को गेहूं में आखिरी पानी देने के बाद में रिलेप्लांटर से मूंग की बोवनी करके। गेहूं में कटाई के उपरांत हैप्पी सीडर या जीरो ड्रिल मशीन से बुवाई करके उप-सतही बूंद बूंद पद्धति से सिंचाई करके।

उन्नत किस्में

पूसा विशाल, पूसा रत्ना, पूसा-0672, एम एच-421, एम एच-1142, एमएच 215, सत्या, एस एम एल-668, एस एम एल-1827, ई पी एम 214, ई पी एम 2057, विराट आदि उन्नत किस्में हैं।

खाद का प्रयोग

सामान्य रूप से ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल में 100 किलोग्राम डीएपी प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। स्थायी बेड विधि या उप-सतही बूंद-बूंद सिंचाई विधि का प्रयोग करके के जल की बचत के साथ अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते है।

कब करें कटाई

जब मूंग की 50 प्रतिशत फलियां पक कर तैयार हो जाएं, तो फसल की पहली तोड़ाई कर लेनी चाहिए। इसके बाद दूसरी बार फलियों के पकने पर फसल की कटाई करें। मूंग की फसल से 5-10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

बीजदर बीजोपचार- बोवनी

छिंटा विधि 30- 35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर, रिले अतरवर्ती विधि 30-35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर, लाइन बिजाई विधि 20 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर। बीजों को पहले 2-5 ग्राम थायरम एवं 1-0 ग्राम कार्बेन्डाजिम या 4-5 ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। फफूंदनाशी से बीजोपचार के पश्चात्बीज को राइजोबियम एवं पीएसबी कल्चर से उपचारित करें। मूंग की 25-30 सेमी कतार से कतार तथा 5-7 सेमी पौधे से पौधे की दूरी पर बुआई करें व स्थायी बेडों पर बोवनी के लिए बेड प्लांटर मशीन का प्रयोग करें। बीज की गहराई 3-5 सेमी होनी चाहिए।

-लॉटरी के बाद चयनित कृषकों की सूची होगी जारी

कृषि यंत्रों पर 50 फीसदी तक सब्सिडी दे रही सरकार

भोपाल। जागत गांव हमार

देश में किसान कृषि कार्यों के लिए महंगे कृषि यंत्र खरीद सकें इसके लिए सरकार द्वारा किसानों को कृषि यंत्रों की खरीद पर सब्सिडी दी जाती है। इसके लिए सरकार द्वारा कई योजनाएं चलाई जा रही हैं।

किसान इन योजनाओं का लाभ आसानी से ले सकें इसके लिए समय-समय पर सरकार द्वारा किसानों से अलग-अलग प्रकार के कृषि यंत्रों के लिए आवेदन मांगे जाते हैं। इस कड़ी में मध्य प्रदेश कृषि अभियांत्रिकी विभाग ने राज्य में किसानों को कृषि यंत्रों पर अनुदान देने के लिए लक्ष्य जारी किए हैं।

जारी लक्ष्यों के विरुद्ध राज्य के किसान 25 जनवरी 2023 दोपहर 12 बजे से 01 फरवरी 2023 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। प्राप्त आवेदनों में से लक्ष्यों के विरुद्ध लॉटरी 2 फरवरी को सम्पादित की जाएगी। लॉटरी उपरांत चयनित कृषकों की सूची एवं प्रतीक्षा सूची पोर्टल पर दोपहर 03 बजे जारी कर दी जाएगी। रबी फसलों की कटाई का समय नजदीक आ रहा है, ऐसे में सरकार ने फसल कटाई एवं फसल अवशेष प्रबंधन सम्बंधित कृषि यंत्रों पर अनुदान देने के लिए लक्ष्य जारी किए हैं। जो इस प्रकार हैं-स्ट्रॉ रीपर, स्वचालित रीपर/रीपर (ट्रेक्टर चालित) और श्रेडर/मल्चर शामिल है।

किस यंत्र पर कितना अनुदान

मध्यप्रदेश में किसानों को अलग-अलग योजनाओं के तहत कृषि यंत्रों पर किसान वर्ग एवं जोत श्रेणी के अनुसार अलग-अलग सब्सिडी दिए जाने का प्रावधान है, जो 40 से 50 प्रतिशत तक है। इसमें किसान जो कृषि यंत्र लेना चाहते हैं वह किसान ई-कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर उपलब्ध सब्सिडी कैलकुलेटर पर कृषि यंत्र की लागत के अनुसार उनको मिलने वाली सब्सिडी की जानकारी देख सकते हैं।

किसानों को बनवानी होगी डीडी

योजना का लाभ लेने के लिए किसानों को स्वयं के बैंक खाते से निम्नानुसार धरोहर राशि का डिमांड ड्राफ्ट (डीडी) संबंधित जिले के सहायक कृषि यंत्री के नाम से बनवाकर ऑनलाइन आवेदन करना होगा। पंजीयन में डिमांड ड्राफ्ट निश्चित राशि से कम का होने पर आवेदन अमान्य किया जाएगा। अलग-अलग कृषि यंत्रों के लिए किसानों को इतनी धरोहर राशि का डीडी बनवाना होगा।

किसान यहां करें आवेदन

मध्यप्रदेश में सभी प्रकार के कृषि यंत्रों के लिए आवेदन किसान भाई ऑनलाइन ई-कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर कर सकते हैं परन्तु किसानों को यह बात ध्यान में रखना होगा की आवेदन के समय उनके पंजीकृत मोबाइल नम्बर पर ओटीपी प्राप्त होगा इसलिए किसान अपना मोबाइल अपने पास रखें। किसान अधिक जानकारी के लिए अपने ज़िले के कृषि विभाग या कृषि यंत्री कार्यालय में सम्पर्क कर सकते हैं।

-सर्वे के बाद भी फसल बीमा योजना का लाभ नहीं मिला

खंडवा में अब तक नहीं मिला बर्बाद फसल का मुआवजा

खंडवा। जागत गांव हमार

पिछले दो वर्षा के दौरान बर्बाद हुई किसानों की फसलों का मुआवजा अब तक नहीं मिला है। फसल बीमा कराने वाले किसान भी स्वयं को ठगा महसूस कर रहे हैं। प्रभावित किसान अब भी शासन से राशि मिलने की उम्मीद लगाए बैठे हैं। जिले में वर्ष 2019-20 में अतिवृष्टि की वजह से किसानों की सोयाबीन फसल नष्ट हुई थी। तत्कालीन कलेक्टर तन्वी सुंद्रियाल ने स्वयं खेतों में पहुंचकर फसलों की नुकसानी का जायजा लिया था। पटवारियों के माध्यम से खेतों में सर्वे भी कराया गया था, लेकिन इस सर्वे के बाद न तो किसानों को राहत राशि मिली और न ही फसल बीमा योजना का लाभ मिल सका। इसी तरह वर्ष 2021 में प्याज की फसल नष्ट होने पर भी किसानों ने कलेक्टर से सर्वे कराने की गुहार लगाई थी। किसानों की फसल का सर्वे तो हुआ, लेकिन सर्वे रिपोर्ट के आधार पर किसानों को किसी तरह की राहत राशि नहीं दी गई। फसलों की नुकसानी पर बीमा और राहत राशि नहीं मिलने से किसान मायूस नजर आ रहे हैं। ग्राम सेगवाल के किसान प्रीतम सिंह गजराज सिंह का कहना है कि वर्षा के दौरान दो एकड़ खेत में कटी हुई फसल नष्ट हो गई थी। ग्राम बावड़िया काजी के किसान प्रेमलाल पटेल का कहना है कि वर्षा से खेत में पानी भर जाने के कारण सात एकड़ में लगी सोयाबीन की फसल बर्बाद हुई थी। जब सर्वे हुआ था तो उम्मीद जगी थी कि सरकार आर्थिक मदद करेगी।

किसान आंदोलन की तैयारी में

ग्राम सिरपुर के किसान दीपक पटेल ने कहा कि वर्षा के कारण चार एकड़ में लगी सोयाबीन की फसल नष्ट हुई थी पटवारियों ने सर्वे भी किया था, लेकिन कोई राहत राशि नहीं मिली। भारतीय किसान संघ के जिला उपाध्यक्ष सुभाष पटेल का कहना है कि शासन द्वारा यदि प्रभावित किसानों के खेतों में सर्वे कराया गया था तो नुकसानी पर राहत राशि दी जानी चाहिए। राहत नहीं मिलने के कारण किसान फसल बीमा से भी वंचित हो जाता है। प्रभावित किसान स्वयं को ठगा महसूस कर रहे हैं। यदि किसानों को राहत राशि नहीं दी जाती है तो आगामी दिनों में आंदोलन किया जाएगा।

केंद्र सरकार की मेहनत रंग लाई, किसानों के अच्छे दिन आए

भरपूर होगा मोटा अनाज, सरकारी खरीद में होगी 8 गुना तक बढ़ोतरी

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

भारत सरकार की पैरवी पर यूनाइटेड नेशन वर्ष 2023 को मिलेट ईयर के रूप में घोषित किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने मोटा अनाज को प्रोत्साहन देने की खुद पैरवी की है। इसका असर देश में ग्राउंड लेवल पर भी दिख रहा है। केंद्र के सहयोग से सभी राज्य मिलेट उत्पादन को बढ़ावा दे रहे हैं। इसका असर भी सभी जगह दिख रहा है। मोटा अनाज उत्पादन और खरीद को लेकर जो आंकड़े सामने आ रहे हैं। वो उत्साह बढ़ाने वाले हैं। देश के 9 राज्यों ने मोटे अनाजों को बढ़ावा देने के लिए मिशन प्रोग्राम शुरू किया है। इस मिशन का असर यह हुआ है कि देश में मोटे अनाज की सरकारी खरीद में 8 गुना तक बढ़ोत्तरी हो सकती है। अभी तक करीब 6 से 7 लाख टन तक खरीदारी हो रही है। आने वाले समय में यह बढ़कर 50 लाख टन तक हो सकती है।

मिशन प्रोग्राम में मप्र भी शामिल- मिशन प्रोग्राम मोटे अनाज को बढ़ावा देने को लेकर है। इसमें 9 राज्य शामिल किए गए हैं। इनमें हरियाणा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, उत्तराखंड, तमिलनाडु और ओडिशा शामिल हैं। सभी राज्य आम लोग और किसानों को भी मोटा अनाज को लेकर जागरूक कर रहे हैं।

पीडीएस के तहत बंटेगा मोटा अनाज

केंद्र सरकार की कोशिश है कि मिशन प्रोग्राम का दायरा बढ़ाया जाए। इसे उस तबके से भी जोड़ा जाए जो गरीब और वंचित है। लिहाजा केंद्र सरकार मोटे अनाज को सार्वजनिक वितरण प्रणाली यानि पीडीएस के तहत बांटने की प्लानिंग कर रही हैं। केंद्र सरकार किसानों से मोटे अनाज की खरीदारी भी करेगी।

खरीद पर ध्यान दें राज्य

केंद्र सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों का कहना है कि राजस्थान बाजरा का सबसे बड़ा और ज्वार का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। सभी राज्यों से अपील की गई है कि मोटा अनाज की खरीद पर अधिक ध्यान देना चाहिए। राजस्थान सरकार किसानों से मोटे अनाज की खरीदारी नहीं कर रही है, जबकि उसे करनी चाहिए। कृषि मंत्रालय विभिन्न राज्यों में उगाए जाने वाले बाजरे को एमएसपी पर लाने की योजना बना रहा है।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

प्रदेशवासियों को 74 वें गणतंत्र दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

निरंतर विकास की ओर अग्रसर
मध्यप्रदेश का हर गाँव - हर शहर

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी D-18996/22 आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2023

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)